# मुद्रा-स्फीति के विभिन्न रूप
(Different Types of Inflation)

मुद्रा-स्फीति के अनेक रूप है जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है:-

(1) वस्तु-स्फीति (commodity inflation):- प्रो० केन्स (Keynes) के अनुसार साधारण मुद्रा-स्फीति की अवस्था को ही वस्तु-स्फीति (commodity inflation) कहते है। इसके अन्तर्गत वस्तुओ की कीमते बढती है।

(2) चलन-स्फीति (currency inflation):- जब सरकार अपनी आवश्यकताओ को पुरा करने के लिए अत्यधिक मात्रा मे मुद्रा जारी करती है जिससे मूल्यो मे वृद्धि होती है तो उसे चलन-स्फीति कहते है। चलन-स्फीति (currency inflation) का मुख्य कारण देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा अत्यधिक मुद्रा जारी करना है। चलन-स्फीति को घाटा-प्रोत्साहित-स्फीति (Deficit-induced inflation) भी कहा जाता है।

(3) साख स्फीति (credit inflation):- कभी-कभी देश के बैंक अत्यधि मात्रा मे साख का प्रसार (expansion of credit) करते है जिससे वस्तुओ की माँग बढने से मूल्य बढते है। इस प्रकार की मूल्य वृद्धि को साख स्फीति (credit inflation) कहते है। इसके मुख्य कारण बैंको का उदार साख नीति (Liberal credit policy) तथा नीची ब्याज की दरे है।

(4) लाभ-स्फीति (Profit Inflation):- जब उत्पादन-व्यय मे कमी होने पर भी सरकार मूल्यो को गिरने से रोकती है तो उत्पादको को पहले की तुलना मे अधिक लाभ होता है। इसे लाभ-स्फीति (Profit inflation) कहते है जिसके चलते उत्पादक वस्तुओ और सेवाओ का उपभोग बढाते है जिससे उनके मूल्य भी बढते है।

(5) मजदूरी प्रोत्साहित स्फीति (wage-induced inflation):- जब उत्पादन मे वृद्धि नही होने पर भी श्रमिक संघो के दबाव मे आकर मजदूरी बढानी पड़ती है जिससे उत्पादन-लागत एवं वस्तुओ के मूल्य बढते है तो इसे मजदूरी-प्रोत्साहित स्फीति (wage-induced inflation) कहते है।

(6) उत्पादन जनित स्फीति (Production Based Inflation):- जब कुछ कारणो से उत्पादन मे कमी हो जाती है लेकिन मुद्रा की पूर्ति ज्यो की त्यो रहती है जिससे मूल्यो मे वृद्धि होती है तो इसे उत्पादन जनित स्फीति कहते है इसका मुख्य कारण मॉनसून का असफल होना, सूख

Scanned with CamScanner

(7) पूर्ण स्फीति एवं आंशिक स्फीति (Full Inflation and Partial Inflation) :- प्रो० पीगू (Pigou) के अनुसार जब मौद्रिक आय (Money Income) में उत्पादन-सम्बन्धी क्रियाओं की अपेक्षा अधिक तेजी से वृद्धि होती है तो मूल्य बढ़ते हैं। इसे पूर्ण स्फीति (Full Inflation) कहते हैं और इसका सृजन उत्पादन के साधनों की पूर्ण रोजगारी (Full employment) के बाद होता है। लेकिन पूर्ण रोजगार की स्थिति के पूर्व भी जब मौद्रिक आय में उत्पादन सम्बंधी क्रियाओं की अपेक्षा अधिक तेजी से वृद्धि होती है तो उसे आंशिक स्फीति (Partial Inflation) कहते हैं।

(8) खुली मुद्रा-स्फीति एवं दबी हुई मुद्रा स्फीति (Open Inflation and Suppressed Inflation) :- जब मौद्रिक आय में वृद्धि हो रही हो और उसके साथ व्यय पर कोई नियंत्रण नहीं लगाया जाय तो वस्तुओं की माँग एवं मूल्यों में तेजी से वृद्धि होती है जिसे खुली मुद्रा-स्फीति (Open Inflation) कहते हैं। लेकिन जब मौद्रिक आय बढ़ने पर कुछ उपायों द्वारा व्यय पर नियन्त्रण लगा दिया जाता है तो उसे दबी हुई मुद्रा स्फीति (Suppressed Inflation) कहते हैं। ऐसी अवस्था में मुद्रा-स्फीति की स्थिति तो विद्यमान रहती है लेकिन उसे दबा दिया जाता है।

(9) लागत-प्रोत्साहित स्फीति (Cost Induced or Cost Push Inflation) :- कभी कभी वस्तुओं की लागत में वृद्धि होने के कारण उन्हें खरीदने में अधिक व्यय करना पड़ता है क्योंकि उनके मूल्य बढ़ जाते हैं। इस प्रकार की स्थिति को लागत-प्रोत्साहित स्फीति कहते हैं।

(10) माँग-प्रोत्साहित स्फीति (Demand-Pull Inflation) :- जब देश में जनसंख्या में वृद्धि होने तथा अन्य कारणों से माँग में वृद्धि होने से मूल्य बढ़ते हैं तो इसे माँग प्रोत्साहित स्फीति (Demand-Pull Inflation) कहते हैं।

(11) रेंगती हुई मुद्रा-स्फीति, गतिशील या चलती हुई मुद्रा स्फीति तथा तीव्रगामी या दौड़ती हुई मुद्रास्फीति (Creeping Inflation, Moving or Walking Inflation and Galloping or Running Inflation) :- तीव्रता की दृष्टि से मुद्रा-स्फीति के उपर्युक्त तीन रूप बतलाये गये हैं। जब वस्तुओं के मूल्यों में धीरे धीरे वृद्धि होती है तो उसे रेंगती हुई मुद्रा-स्फीति (Creeping Inflation) कहते हैं। अर्थशास्त्रियों का विचार है कि यदि मूल्य प्रतिवर्ष 2 प्रतिशत या उससे कम बढ़ते हों तो रेंगती हुई मुद्रा

स्फीति की स्थिति आती है और इससे कोई विशेष चिन्ता की जरूरत नहीं होती। लेकिन जब किसी देश में मूल्यों में रेंगती हुई मुद्रा-स्फीति की अपेक्षा अधिक तेजी से वृद्धि हो अर्थात मूल्य 2 प्रतिशत प्रति वर्ष से अधिक बढ़े तो इसे गतिशील या चलती हुई मुद्रा-स्फीति (Moving or walking inflation) कहते हैं। इस प्रकार की मुद्रास्फीति चिन्ताजनक होती है। क्योंकि इसमें धीरे-धीरे जनता का कष्ट बढ़ता है, लेकिन जब मूल्यों में अत्यधिक तेजी से वृद्धि हो रही हो अर्थात् जब मूल्य 10 प्रतिशत या उससे अधिक प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़े तो उसे तीव्रगामी या दौड़ती हुई मुद्रा-स्फीति (Galloping or Running inflation) कहते हैं। इस प्रकार की मुद्रा स्फीति किसी भी देश के लिए काफी भयावह होती है। इसे अति मुद्रा-स्फीति (Hyper or Super inflation) भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner